आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2735 • उदयपुर, मंगलवार 21 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

गजरौला (अमरोहा, उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता –मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 5 से 6 जून को 9– BF मेडीकल सेन्टर निउटराम धर्मकांटा में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता जूवीलेण्ड भरतिया फाउन्टहान रहे। शिविर में ओपीडी 100, कृत्रिम अंग नाप 80, कैलिपर नाप 31 तथा 10 को कृत्रिम अंग लगाने व 7 की कैलिपर लगाने की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री बी.के. त्रिपाठी जी (जिलाधिकारी महोदय), अध्यक्षता श्री विनित जी जायसवाल (पुलिस अधीक्षक), विशिष्ट अतिथि श्री चन्द्रशेखर जी शुक्ला (मुख्य विकास अधिकारी), श्री मायाशंकर जी (अपर जिलाधिकारी), श्री सुनिल जी दिक्षित (निदेशक जन संर्पक उ0प्र0), डॉ. सुनिन्द्र फोगाट, डॉ नितिन जी राय (चिकित्सा अधिकारी), श्रीमति आरती जी शर्मा, श्री अजय कुमार जी शर्मा (सेवाप्रेरक, गजरोला) रहे। डॉ.रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो), श्री किशन लाल जी सुथार, (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढा (शिविर प्रभारी),श्री गोपाल जी गोस्वामी, सत्यनारायण जी मीणा, मुन्नासिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

नारायण सेवा ने दिव्यांग नरेन्द्र को भेंट की मोटराइज्ड व्हीलचेयर

जिन्दगी, उम्र और हालात किस मोड़ पर कब कैसी करवट ले, कोई नहीं जानता। सब कुछ बदल जाता है, सिर्फ कुछ ही पलों में। मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिला के जमुड़ी कस्बे के नरेन्द्र रौतेल (32) के साथ वक्त ने कुछ ऐसा ही किया कि रफ्तार से चल रही जिन्दगी को ब्रेक लग गया, ट्रेन के पहियों ने उसके दोनों पैर उससे छीन लिए।

नरेन्द्र 2016 में उड़ीसा के रेडाखोल में एक कंट्रक्शन कम्पनी में सुपरवाईजर का काम करता था। नोटबंदी के दौरान वह घर पर पैसे भेजने के लिए ट्रेन से बैंक के लिए निकला। बामूर रेल्वे स्टेशन से थोड़ा पहले सिगनल न मिलने से ट्रेन रूकी हुई थी। पैसा भेजकर कार्यस्थल पर जल्दी पहुंचने में वह ट्रेन से वहीं उतर ही रहा था कि ट्रेन चल पड़ी। नरेन्द्र के दोनों पांव पहियों की चपेट में आ गये। इलाज के दौरान दोनों पैर घुटने के नीचे से काटने पड़े। भुवनेश्वर दिल्ली और मध्यप्रदेश में दो वर्ष तक इलाज और मदद के लिए चक्कर लगाये पर सब जगह निराशा ही मिली। इसी दौरान भाई की मौत, भाभी का अन्यत्र चले जाना और खुद की दिव्यांगता दिन ब दिन घर की दयनीय दशा का कारण बनती जा रही थी। तभी उसे नारायण सेवा संस्थान की जानकारी मिली। वह 2019 में पहली बार संस्थान में आया जहां संस्थान की निदेशक वंदना जी अग्रवाल और प्रास्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिक प्रमुख डॉ. मानस रंजन जी साहू ने हौसला दिया। कृत्रिम पांव लगाए, चलने की ट्रेनिंग दी साथ ही उसे कम्प्यूटर चलाने का प्रशिक्षण भी दिया गया। 6 मार्च 2022 को संस्थान में सिलाई सीख रही सकलांग नीलवती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ।

कुछ दिन पहले नरेन्द्र ने संस्थान से अनुरोध किया कि पति–पत्नी संयुक्त व्यापार शुरू कर परिवार के 8 जनों का भरण पोषण करना चाहते हैं। इसके लिए उसे अपने गांव से 2–3 किलोमीटर रोजाना आना जाना होगा और इतनी दूरी कृत्रिम अंग के सहारे तय करना दूभर है। संस्थान ने दिव्यांग एवं निर्धन नरेन्द्र के परिवार को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए सोमवार को करीब एक लाख लागत की बेट्री ऑपरेटेड मोटराईज्ड व्हीलचेयर निःशुल्क भेंट की। जो सड़क और घर दोनों जगह काम आ सकती है। मदद पाकर नीलवती और नरेन्द्र मुस्कुरा उठे।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 26 जून, 2022

▪ बजरंग आश्रम, हॉसी, हरियाणा

▪ रामा विष्णु सरस्वती शिशु मंदिर चांदपुर चौराहा, नहटौर, उ.प्र.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

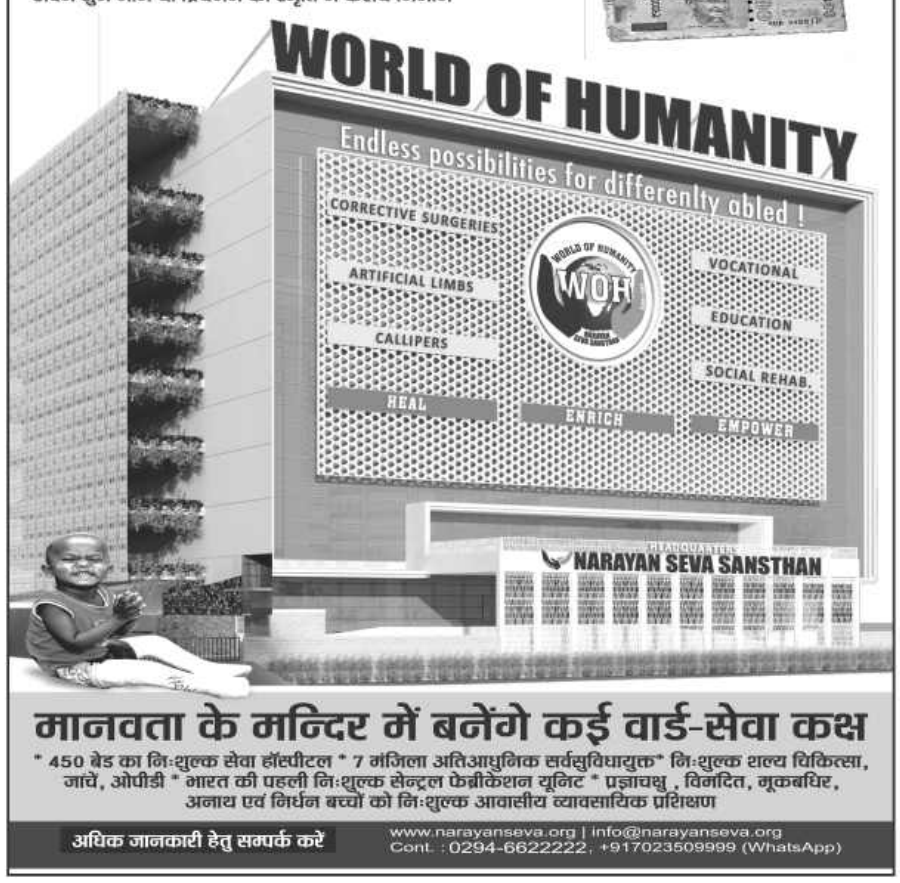

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. :0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

भिण्ड (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 22 मई 2022 को श्रीमती विमला देवी स्पेशल विद्यालय जामना, भिण्ड मध्यप्रदेश में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् शिवभान सिंह जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 61, कृत्रिम अंग वितरण 36, कैलिपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रवीण कुमार जी फुलपगारे (ए.डी.एम. साहब, जिला भिण्ड) अध्यक्षता श्रीमान् शिवभान सिंह जी (संस्थापक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् शिवप्रताप सिंह जी भधोलिया (समन्वयक जन अभियान परिशद), श्रीमान् पवन जी भास्त्री (भागवताचार्य समाजसेवी), श्रीमान् उपेन्द्र जी व्यास (समाजसेवी), श्रीमान् हर्शवर्धन जी (सक्षम संस्थान, भिण्ड) रहे।

डा.रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भंवर जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेभा जी भोर्मा (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास, श्री हरीभा सिंह जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

उत्तम चरित्र वाले अंगदजी की कथा। पिछली बार की सत्संग वार्ता ये श्रोता और वक्ता एक हो गये। आपमें और हमारे में कोई फर्क नहीं है। मानव जाति एक समान। देअर ऑनली इज वन गॉड एण्ड हि इज ऑनली प्रजेन्ट। ई वर केवल एक है, वो सर्वव्यापक है। देअर इज ऑनली रिलीजन, रिलीजन ऑफ लव। जाति केवल एक है या धर्म केवल एक है। वो प्रेम का धर्म है अभी सुना ना आपने। प्रेम बढ़ाय, सकारात्मक चरित्राय प्रेम बढ़ाय। तो ये अंगद के प्रेम और वीरता की कथा। कितने–कितने महारथी यूं बांहे उठाकर के अंगदजी के चरण को हिला भी नहीं पाये महाराज। तब रावण खुद उठा और रावण उठकर के उनके चरणों की तरफ झुकने लग गया तो अंगदजी ने कहा– ऐ रावण, भगवान श्रीराम के चरणों की तरफ झुक। भगवान राम के चरणों को पकड़। मेंरे चरणों को पकड़ने से क्या होगा ? तो रावण जैसे श्रीहीन होकर, कान्तिहीन होकर कान्तिहीन कहते हैं – चेहरा रो आब ही उतर ग्यो। अरे ! इको चेहरा रे आब कटे ग्यो ? अरे ! इको तो मुंडो ही मरझाई ग्यो ? अरे ये तो निरा ा वेई ग्यो। अरे इका मुंडा मू तो लार आई री है। हाँ, ऐसो नी वणनो।

मन के हारे हार हुई है,
मन के जीते जीत सदा।
सावधान मन हार न जाये,
मन से इन्सा बना सदा।।

ये इन्सानियत की कथा है।

बीस वर्ष भोगी पीड़ा, अब खुश हूँ !

जन्म के 6 माह बाद ही पोलियो की शिकार हुई स्वाति (22) नारायण सेवा संस्थान में पिछले वर्ष पोलियो केरेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खड़ी होती और चलती है। गोरखपुर (उप्र) में बीटीएस की छात्रा स्वाति सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई हैं। उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूँ तो रो पड़ती हूँ। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉस्पीटल में लम्बा इलाज भी चला, लेकिन फायदा नहीं हुआ। घिसटकर चलना ही उनकी नियति था। नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो गत वर्ष नवम्बर में यहाँ आई और डॉ. ए.एस. चुण्डावत ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से वे खड़ी भी होती हैं व बिना सहारे चलती भी हैं। पाँव का टेढ़ापन भी काफी ठीक हो गया है।

सम्पादकीय

सेवा मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट करनी है। जन्म से ही मानव अंश है तथा ईश्वर अंशी। सेवा सीधा–सीधा ईश्वरीय कार्य है। अतः अंश जितनी सेवा करेगा उतना ही वह अंशी अर्थात् ईश्वर के समीप होता चला जाएगा। प्रभु ने सेवा की महत्ता को प्रतिपादित करने के लिए अपने अवतरण में स्वयं भी अनेक प्रकार की सेवाएं की हैं। सेवारूपी साधना से परमात्मा शीघ्र रीझता है। उसे अपने भक्त से यही अपेक्षा रहती है कि वह सेवा का चिन्तन, सेवा का प्रयत्न और सेवा का जीवन साकार कर ले। सेवा चाहे किसी भी प्राणी की हो, उसकी श्रेष्ठता समान है। सेवा शरीर से हो या विचार और भावना से उसे सेवा की श्रेणी में ही गिना जाता है। किसी सद्कार्य की सराहना या यथाशक्ति सहयोग भी सेवा का ही एक रूप है। सेवा के अवसर हमारे जीवन के इर्दगिर्द उपस्थित हैं। बस हमें उन्हें पहचानना और उपयोग करना है। यह भी परमात्मा की पूजा का एक विधान है।

कुछ काव्यमय

सेवा की संकल्पना, देती रहे उजास।
परमपिता तुमसे यही, विनती मेरी खास।।
जीवन सेवा में खपे, ऐसा हो सौभाग।
निशिवासर जलती रहे, परहित वाली आग।।
भावों से सेवा करूं, तब तो धन धन भाग।
भाव नहीं फिर भी प्रभु जलता रहे चिराग ।।
जो सेवा अवसर मिले, कहीं नहीं हो चूक।
हाथ पकड़ समझा दियो, कह करके दो टूक।।
करुणा की हो आरती, सेवा का हो भोग।
दीनदयालु खुश रहे, ऐसा हो संजोग।।

अपनों से अपनी बात

सेवा का आह्वान

परमार्थ की भावना जब उत्पन्न होती है, तो अपना सब कुछ देने को तत्पर हो जाती है। जीवन साथी का सहयोग मिलने पर यह और भी स्तुत्य हो जाती है।

माघ विद्वान कवि थे एवं प्रतिभावान भी। अपनी अद्भुत काव्य शक्ति के बल पर उन्होंने कमाया भी बहुत। इतने पर भी वे कभी सम्पन्न न बन सके। जो हाथ आया वह अभावग्रस्तों, दुःखी–दरिद्रों की सहायता के लिए बिखेर दिया।

एक बार उस क्षेत्र में दुर्भिक्ष पड़ा। कवि ने अपनी सम्पदा बेचकर वहां के दीन–दरिद्रों की अन्नपूर्ति के लिए लगा दिया। मात्र उनका नवरचित काव्य घर में शेष रह गया था। सोचने

लगे इसके बदले कुछ पैसा मिला जाये तो उसे भी समय की आवश्यकता पूरी करने के लिए लगा दिया जाय। माघ और उनकी धर्म पत्नी लम्बी पैदल यात्रा करके राजा भोज के दरबार में पहुँचे। एक अपरिचित महिला द्वारा काव्य, बेचने की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। काव्य के कुछ पृष्ठ उलटते ही राजा दंग रह गया। उन्होंने मुक्त हस्त से उसका पुरस्कार दिया। जो मिला उसे लेकर मार्ग में फिर वही दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र मिले, वहीं से बांटना चालू किया।

आपका यह संस्थान दुर्भिक्ष रूपी पोलियो विकलांगों के लिए जो कर रहा है, वह है –समुद्र में बूंद के समान। इस भगवत कार्य में आपश्री की धनरूपी लक्ष्मी द्वारा आहुति की वैसे ही आवश्यकता है –जैसे दुर्भिक्षग्रस्त क्षेत्र में अन्न की।

संस्थान के कई दानदाता इस महायज्ञ में सुदूर रहते हुए भी अपनी आहुतियाँ दे रहे हैं –पुण्य का संग्रह कर रहे हैं– यदि आपश्री अभी तक नहीं जुड़ पाये है किसी कारण से तो अभी जुड़ जाइये– अन्तःकरण में उठे विचारों को दबाइये मत। दीजिये –सेवा में अपना सहयोग।

–कैलाश 'मानव'

सफलता के सोपान

हमारे लिये बहुत अच्छी बातें हैं। जो माली है, जो बगीचा तैयार करता है, वो अच्छे–अच्छे सुन्दर फूल लेकर अपने बगीचे में लगाता है। वो कांटे के पेड़ नहीं लगाता है। हम भी अपने जीवन में कांटे नहीं बोयें, सुन्दर – सुन्दर सुगन्धित पुष्प लगायें, उसके लिए अच्छा है आप अच्छा देखें, आप क्या चैनल देखते हैं? आप क्या खबर पढ़ते है? आप वातावरण में क्या देख रहे है? उस पर आपके जीवन पर बहुत असर पड़ेगा। आप कभी गंदी चीजें नहीं देखें, आप नकारात्मक चीजें नहीं देखें, ना ही नकारात्मक सुनें। गांधी जी के तीन बन्दर थे,

पहला ना ही बुरा सुनो, न बुरा देखो, न बुरा बोलो, ये तीन बन्दर और इन तीन बन्दर से बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। गांधी जी ने एक बात बहुत सुन्दर कही थी मैं नहीं मेरी जीवन पोथी बोले। मतलब मेरा जीवन जो चल रहा है मैं किसी में लिख दूं वो नहीं बोले, मेरा जीवन जैसा है उससे प्रेरणा मिलनी चाहिये।

हम भी तीन बन्दर की तरह अपने जीवन में ये आत्मविश्वास कर लें, न बुरा देखेंगे न बुरा सुनेंगे, न बुरा बोलेंगे, आप देखेंगे कि आप चमकने लग जायेंगे, आप विश्व में अलग से दिखने लग जायेंगे। आपका मान सम्मान बढ़ जायेगा। आपको सब चाहने लग जायेंगे। आप सफलता में बहुत आगे बढ़ जायेंगे। आप सफलता के अन्तिम सोपान तक पहुंच जायेंगे। ये कुछ सत्य है जो हमारे जीवन में उतरने चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

चैनराज ने जब यह जानकारी कैलाश को दी तो वह भी खुश हो गया। अचानक उसे लगने लगा जैसे उसके कन्धों पर भारी भार पड़ गया हो। अभी तक जो सेवा कार्य चल रहे थे वे व्यवस्था करने के ही थे मगर एक अस्पताल बनाना और उसे चलाना बहुत बड़ी जिम्मेदारी का काम था। अस्पताल के लिये अलग से जमीन की भी आवश्यकता थी। इस हेतु यू.आई.टी. में पहले से ही आवदन कर रखा था। कैलाश चाहता था कि पहले से जो जमीन मिली हुई है, उससे सट कर ही जमीन मिल जाये जो बहुत अच्छा रहेगा, मगर ऐसा नहीं हुआ, यह जमीन किसी ओर को आवंटित हो गई। कैलाश को उसके अगले वाले प्लॉट की जमीन आवंटित हुई। कैलाश ने कोशिश की कि प्लोटों की अदला बदली हो जाये पर वह संभव नहीं हो पाया।

अस्पताल तो बनेगा जब बनेगा मगर इस दौरान बच्चों के ऑपरेशन का क्या होगा यही सोचकर कैलाश चिन्तित था। मुम्बई के उस धोखेबाज डॉक्टर के पास वह वापस जाना नहीं चाहता था, तभी उसे ख्याल आया कि पोलियो का ऑपरेशन करने वाले अन्य डॉक्टर भी जरूर होंगे।

कैलाश ने अपने मन की बात चैनराज को बताई तो उन्होंने मुम्बई के कई डॉक्टरों से पूछताछ की, अन्ततः एक डॉक्टर का पता लग ही गया जो इस तरह के ऑपरेशन करता था। ये डॉ. शाह थे जो जैन समाज से जुड़े थे। डॉ. शाह को उदयपुर के गरीब, लाचार आदिवासियों के बारे में बताया तो उनका भी मन पसीज गया। वे इन लोगों का उदयपुर आकर ऑपरेशन करने को तैयार हो गये।

डॉ. तैयार तो हो गये मगर कैलाश के मन में धुकधुकी चल रही थी कि पैसा कितना लेगा। डॉ. से पूछा तो उसने सहजता से कह दिया कि आप जितना दोगे उतना ले लूंगा। दूध का जला छाछ को भी फूंक फूंक कर पीता है, वह वापस पहले वाले डॉक्टर जैसी गलती नहीं दोहराना चाहता था इसलिये डॉ. को साफ साफ कह दिय कि आप अपने श्रीमुख से ही बता दें कि कितना लेंगे।

अंश - 132

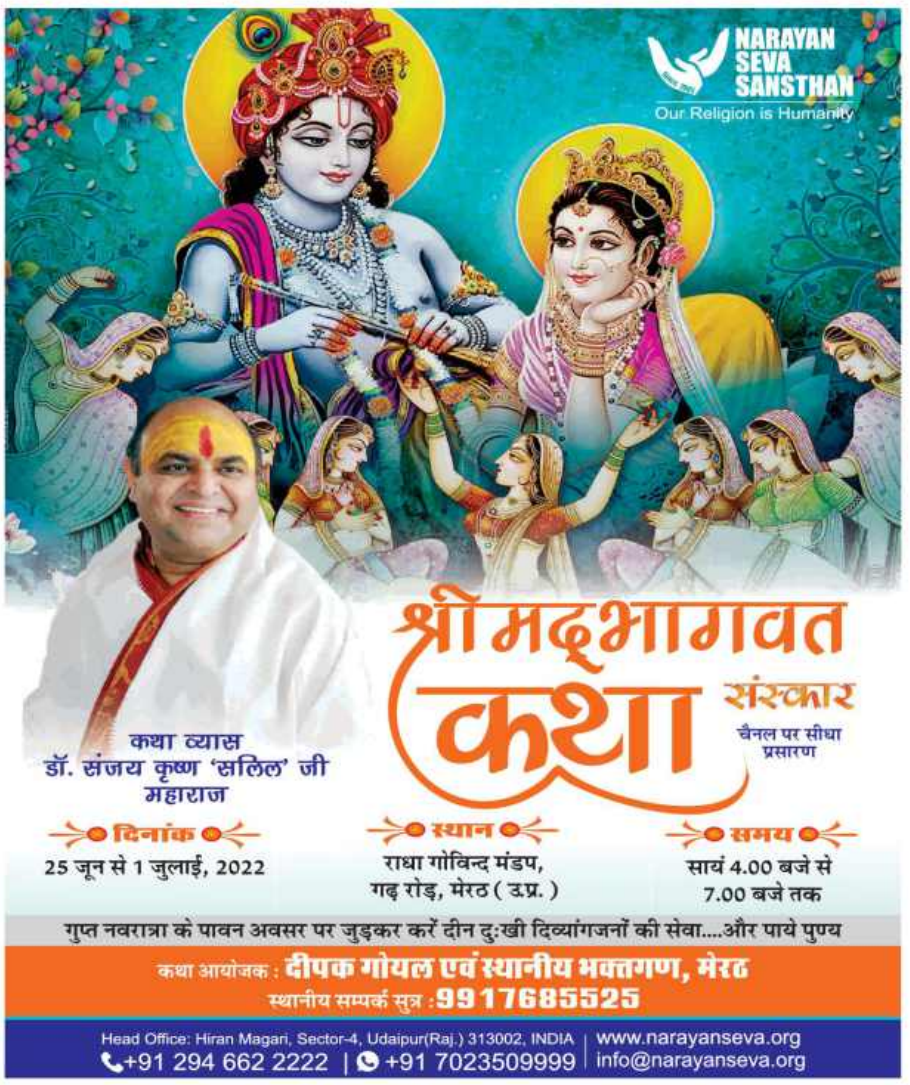

नीम उपयोगी है

- नीम की पत्तियों को उबाल लें और उसको पानी में मिलाकर नहाने से मुंहासों, से बचाव होता है।
- नीम की चटनी खाने से पाचन संबंधी रोग नहीं होते हैं।
- रोज सुबह खाली पेट नीम की 4–5 पत्तियां चबाने से खून साफ होता है। कील मुहांसें नहीं होते हैं।
- कटने–जलने पर इसका पेस्ट लगाने से आराम मिलता है।

करौंदा लाभदायक है

- करौंदा यानी क्रैनबेरी, एंटी– ऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है। इसके उपयोग निम्नांकित है –
- इसे सब्जी या चटनी के रूप में भी खा सकते हैं।
- यह स्वाद बढ़ाने में कारगर है।
- पेट में दर्द व सूजन आदि में इसका सेवन राहत देता है।
- यह इम्युनिटी में वृद्धि करता है। इसे खाने से कॉलेस्ट्रोल का स्तर घटता है।
- आयरन रिच व वजन कम करने में भी मददगार है।
- करौंदे का जूस बना सकते हैं।
- जैम, आचार, मुरब्बा आदि बना सकते हैं।
- एक दिन में 10–15 ही खाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

घिसट घिसट कर संस्थान में आया लौटते वक्त अपने पैरों पर खड़ा था

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) जिले के गांव भाबसी निवासी श्री धर्मवीर सिंह के पुत्र अर्पित जन्म से ही एक पांव में घुटनों से नीचे तक दिव्यांग था। गरीबी के कारण न उसका इलाज हो सका और न ही उसे पढ़ने के से भेजा जा सका। माता– पिता बच्चे की इस हालत और उसके भविष्य को लेकर सदैव चिंतित रहते। घर का माहौल हर समय उदासी से भरा रहता था। धर्मवीर बताते हैं एक दिन उन्हें किसी परिचित में नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांगों की निःशुल्क चिकित्सा, कृत्रिम अंक लगाने और सहायक उपकरण दिये जाने की जानकारी दी। उसके बाद वे बेटे को लेकर उदयपुर आए और संस्थान के डॉक्टर से मिले जिन्होंने दिलासा देते हुए कहा कि आप बेटे को गोद में उठा कर लाए है किंतु वह अपने पांव पर खड़ा होकर चलते हुए अपने घर में प्रवेश करेगा। कुछ दिनों के इलाज के बाद उसे विशेष कैलीपर पहनाया गया।

अर्पित जब पिता के साथ पुनः अपने घर के लिए रवाना हुआ तब यह संस्थान के अस्पताल से चलते हुए ही बाहर निकला। पिता ने कहा मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। अब इसके लिए मैं वो सब– कुछ करूंगा जिसका सपना देखा करता था।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

शुभकामना परिवार, मगंलकामना आपको। आज दिनांक 19–5–2020 को साढ़े छः बजे बैठे हैं– परमानंद भवन में। सभी को मगंलकामना।

परमात्मा की परम् कृपा से, जो परमात्मा के विभिन्न रूप। कहीं जो गायत्री मंत्र बोला जाता है, उच्चारण किया जाता है। मंत्रों में गायत्री मंत्र, कृष्ण भगवान ने विभूति योग में कहा– मैं मंत्रों में गायत्री मंत्र हूँ।

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सतुिर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात।।

हे! प्रभु आप सर्वज्ञ हैं, भूर्भुवः स्वः। उनके तत्वों का मैं वर्णन करता हूँ, चयन करता हूँ। अभी–अभी चौंसठ मिनट भगवान ने, परमात्मा ने देहदेवालय में अनित्य की धारणा। ये सांस अनित्य है कभी रूकेगा और जब सांस रूकेगा तो ? हाँ बाबू, बंधू आप कहोगे महाराज आप रूकवा री वात क्यों केईरिया ? चलो रूकने की बात नहीं करते। कभी न कभी तो, कभी न कभी जाना ही होगा।

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है वो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।।
भैया, तो लाला, बाबू प्रभु की, परमात्मा की बड़ी कृपा।

आदरणीय जगदीशजी आर्य साहब, प्रिय प्रशान्त भैया, आदरणीया वन्दना जी, अग्रवाल महोदया, प्रिय पलकजी, प्रिय महर्षि जी, प्रिय कल्पना जी, औजस भैया, आस्थाजी। परम् पूज्य राधेश्यामजी भाईसाहब, प्रिय जगदीश आकाश, सत्यनारायण जी सभी लगे हुए हैं। देवेन्द्र चौबीसा दौड़ता है। नेत्र शिविर पहली बार नैत्र शिविर नारायण सेवा का। बैनर में क्या है? बैनर नारायण सेवा संस्थान का है। भगवान महावीर स्वामी का है, बुद्ध भगवान की जयन्ती का है। बैनर है। भैरव नेत्र यज्ञ चिकित्सा शिविर का बैनर है। बैनरों में कोई विशेष बात नहीं है। ये बात समझ में आ जाती है, जब समझ में आता है कि ये साढ़े तीन हाथ की काया में प्रतिक्षण बदलाव हो रहा है। शरीर में कोई कोशिका ऐसी नहीं, जो बदलाव नहीं कर रही, प्रतिक्षण। क्या बदलाव ? आइये समझने की कोशिश करें।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 485 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023